सरकार से नहीं मिली राहत तो ग्रामीणों ने दो दिन मेहनत कर सूखे कुएं से निकाल लिया पानी

धार। उमरबन विकासखंड के ग्राम कालापानी के एकमात्र जीवित कुएं में भीषण गर्मी के चलते पानी समाप्त हो गया था। दरअसल भू-जल स्तर गिरने के कारण पानी गहराई की ओर गया था। ऐसे में ग्रामीणों को जब समझाइश दी गई कि जनसहयोग से वे यदि इस कुएं को गहरा करते हैं तो न केवल वर्तमान में बल्कि भविष्य में भी इसका लाभ मिलेगा। ऐसे में रविवार और सोमवार दोनों ही दिन श्रमदान किया। इसका परिणाम यह रहा कि तीन फीट गहराई तक गाद निकाल दी गई और पानी आ गया। इससे सूखे जैसे हालात में ग्राम कालापानी के लोगों को पीने का पानी मिल रहा है। साथ ही यह पानी फ्लोराइडमुक्त भी है।

ग्राम कालापानी में ग्रामीणों की अनोखी पहल

गौरतलब है कि ग्राम कालापानी एक ऐसा स्थान है जहां पर फ्लोरोसिस की बीमारी ने पैर पसार रखे हैं। ऐसे गांव में किसी भी संस्थान के लिए यहां पर लोगों को प्रेरित करने के लिए सबसे पहले सुरक्षित स्रोतों की खोज करना होती है। पीएसआई देहरादून द्वारा यहां पर पिछले कुछ समय से पानी के मसले को लेकर काम किया जा रहा है। इसी के तहत संस्थान ने एक साल पहले यहां पर कुएं पर मोटर आदि की व्यवस्था करवाते हुए टंकी उपलब्ध कराई थी। इससे कि पेयजल व्यवस्था चल रही है।

10 दिन पहले हुए थे बुरे हालात : इस संबंध में पीएसआई देहरादून की रिसर्च ऑफिसर पूजा सिंह ने बताया कि दस दिन पहले यहां पर सुरक्षित पानी के लिए एकमात्र स्रोत में पानी कम हो जाने से लोग चिंता में पड़ गए थे। ऐसे में नईदुनिया द्वारा बावड़ियों और कुओं की सफाई के लिए मुहिम चलाई जा रही है। इसे भी हमने प्रेरणादायी कदम माना। लोगों को समझाने में हमने यह मदद भी ली। हमने ग्रामीणों को भी ऐसा कदम उठाने के लिए कहा। इसी के चलते रविवार को ग्राम कालापानी में ग्रामीणों ने कुए के गहरीकरण का काम शुरू किया। भीषण गर्मी में दो दिन लगातार आदिवासी अंचल के परिवार काम करते रहे। पूजा सिंह ने बताया कि हमने खुदाई के लिए इन्हें मदद के लिए भी प्रस्ताव रखा था लेकिन बिना मदद लिए ही इन्होंने कवायद की। इसी का परिणाम था कि तीन फीट तक गाद निकाली और पीने योग्य पानी आ गया। अब सोमवार से पुनः गांव के लोग पीने का पानी लेने लगे हैं।

सरकार से भी नहीं मिलना थी मदद : दरअसल ग्रामीणों ने इस मामले में पहले सरकारी तंत्र पर भरोसा किया था। इसी के चलते उन्होंने संबंधित विभाग से गुहार लगाई थी। लेकिन यह कुआ निजी व्यक्ति का होने से उस पर विभाग कुछ नहीं कर सकता था। ऐसे में एक छोटी सी प्रेरणा से लोगों ने श्रमदान करके एक महत्वपूर्ण उदाहरण समाज के सामने रखा है।

गहरे कुएं में रस्सी से तगारी बांधकर गाद निकाली गई।